शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 नवम्बर 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

'तमस' और 'शहर में कर्फ्यू' उपन्यास में वर्णित साम्प्रदायिकता का तुलनात्मक अध्ययन

सरोज बैरड़ (शोधार्थी)
वनस्थली विद्यापीठ
राजस्थान, भारत

शोध संक्षेप

भीष्म साहनी और विभूति नारायण राय के उपन्यासों क्रमशः 'तमस' और 'शहर में कर्फ्यू' में अनेक समानताएँ और विषमताएँ लक्षित होती हैं। दोनों उपन्यासकारों ने अपने उपन्यासों में साम्प्रदायिकता के फैलते जहर का चित्रण किया है, इसलिए इनका केनवास समान है। वहीं भीष्म साहनी और विभूति नारायण राय ने अपने उपन्यासों में अलग-अलग कालावधि को कथानक का आधार बनाया है, इसी कारण इन कृतियों में वैभिन्य भी परिलक्षित होता है। प्रस्तुत शोध पत्र में दोनों उपन्यासों का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है।

प्रस्तावना

अखण्ड भारत का विभाजन इस देश की अभूतपूर्व त्रासदी थी। सैद्धान्तिक रूप से इस त्रासदी का स्वरूप भले ही राजनैतिक रहा हो लेकिन व्यावहारिक रूप से निश्चय ही साम्प्रदायिक थी। सदियों से साथ रहते आये एक ही सांस्कृतिक विरासत वाले लोग एक दूसरे के प्रति इतनी घृणा और नफरत प्रकट कर सकते हैं, हत्या के इतने जघन्य और क्रूरतम तरीके व्यवहार में ला सकते हैं, इसकी शायद किसी ने कल्पना भी नहीं की होगी। इतना बड़ा नरसंहार; वह भी एक ही भू-भाग में रहने वाली, समान जातीय भावों एवं संस्कृति से बंधी जातियों का; भारत के स्वर्णिम इतिहास की सबसे शर्मनाक घटना थी। इसी शर्मनाक घटना को आधार बनाकर लिखे गऐ ये दोनों उपन्यास ऊपरी तौर पर भिन्नता रखने के बावजूद गहराई से देखने पर एक ही भाव की विस्तृत व्याख्या करते दिखाई देते हैं और वह है लोगों के मन मैं मानवीयता के स्थान पर कुंडली मारकर बैठी सांप्रदायिकता की भावना। जिसका निराकरण भारत विभाजन और इस प्रक्रिया में होने वाला भीषण नरसंहार भी करने में अक्षम रहा। दोनों उपन्यासों में निहित साम्य और वैषम्य को हम इस प्रकार व्याख्यायित कर सकते हैं-

साम्य

भोगे हुए यथार्थ का चित्रण - 'तमस' तथा 'शहर में कर्फ्यू' दोनों ही उपन्यास उपन्यासकारों की कोरी कल्पना का हिस्सा न होकर भोगे हुए यथार्थ का शब्दबद्ध रूप है। अपने-अपने जीवन के एक निश्चित काल के अनुभवों को आधार बनाकर दोनों उपन्यासों की रचना की गई है। भीष्म साहनी ने जहाँ स्वयं विभाजन की त्रासदी को झेला है, वहीं विभूति नारायण ने अपने पुलिस अधिकारी के कार्यकाल में दंगों की विभीषिका को भोगा है।

भीष्म साहनी ने अपने जन्म स्थान रावलपिंडी (लाहौर) में होने वाले दंगों को स्पष्ट करते हुए लिखा है, "मार्च महीने में हमारे शहर में दंगा हुआ जो पाँच दिन तक रहा। शहर की खबरें जब

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 नवम्बर 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

देहात में पहुँची तो वहाँ भी दंगे भड़क उठे। उसके बाद शहर का दृश्य बदलते देर नहीं लगी। ... तरह-तरह की अफवाहें फैलने लगीं। सुनते हैं कैन्टोनमेंट के अस्पताल में हिन्दू-सिख जख्मी लोगों का इलाज नहीं किया जा रहा। ... सुनते हैं शहर के बड़े थाने में सभी हिन्दू-सिख सिपाहियों को अपनी बन्दूकें मालखाने में दाखिल कर देने का हुक्म दिया हुआ है। ऐसा हुक्म मुसलमान सिपाहियों को नहीं दिया गया।... हमारे इलाके में से 'ले के रहेंगे पाकिस्तान!' 'अल्लाह-ओ-अकबर!' 'कायदे आजम मुहम्मद अली जिन्ना जिन्दाबाद!' और दूर शिवालय की ओर से 'हर-हर महादेव!'"[1] इसी खौफ और भय के वातावरण तथा अज्ञान व अफवाहों के 'तमस' को ही भीष्म साहनी ने 'तमस' उपन्यास में प्रस्तुत किया है।

इसी तरह विभूति नारायण ने भी स्वयं के अनुभवों को 'शहर में कर्फ्यू' उपन्यास में संकलित किया है। उनके अनुसार- "शहर में कर्फ्यू' लिखना मेरे लिए एक त्रासदी से गुजरने जैसा था। उन दिनों में इलाहाबाद में नियुक्त था और शहर का पुराना हिस्सा दंगों की चपेट में था। हर दूसरे-तीसरे साल होने वाले दंगों से यह दंगा मेरे लिए कुछ भिन्न था। इस बार हिंसा और दरिंदगी अखबारी पन्नों से निकलकर मेरे अनुभव संसार का हिस्सा बनने जा रही थी- एक ऐसा हिस्सा जो अगले कई सालों तक दुःस्वप्न की तरह मेरा पीछा नहीं छोड़ने वाला था। मुझे लगा कि इस दुःस्वप्न से मुक्ति का सिर्फ एक उपाय है इन अनुभवों को लिख डाला जाए।"[2] और इसी प्रयास में उन्होंने इस उपन्यास की रचना की। इलाहाबाद के दंगों से प्राप्त अनुभवों को ही विभूति नारायण राय ने अपने उपन्यास का आधार बनाया।

अतः दोनों लेखकों के अनुभव जगत ने ही उनके उपन्यासों में स्थान पाया है। दोनों लेखकों के सामाजिक परिवेश में साम्प्रदायिकता का महत्त्वपूर्ण स्थान रहा है। एक ने उसे स्वयं भोगा है, तो दूसरे ने उस पर कार्य किया है। अतः दोनों लेखकों का साम्प्रदायिक परिवेश से निकट सम्बन्ध रहा है।

तुच्छ राजनीतिक मानसिकता - दोनों ही कथाकारों ने सांप्रदायिक दंगों के मूल में राजनीतिक शक्तियों को जिम्मेदार माना है। 'तमस' उपन्यास में आजादी से पूर्व अंग्रेजों द्वारा अपनायी गई 'फूट डालो, राज करो' की नीति का वर्णन किया गया है तो 'शहर में कर्फ्यू' उपन्यास में आजाद भारत में इसी नीति का अनुसरण करने वाले नेताओं और पूँजीपतियों की कूटनीतिक चालों को उजागर किया गया है। जिस स्वार्थ की राजनीति का बीज अंग्रेजों ने बोया था, उसी के पौधे को पल्लवित और पुष्पित होते 'शहर में कर्फ्यू' उपन्यास में दिखाया गया है।

'तमस' उपन्यास में लेखक द्वारा रिचर्ड, मुराद अली, वानप्रस्थी जी, मेहताजी आदि कुछ पात्रों के माध्यम से स्वार्थ के घेरे से घिरी तत्कालीन राजनीति के वास्तविक स्वरूप को उजागर किया है तो 'शहर में कर्फ्यू' में हाजी बदरूद्दीन, रामकृष्ण जायसवाल, लाला राधेलाल, अयोध्यानाथ दीक्षित जैसे नेताओं और पूँजीपतियों के माध्यम से। दोनों ही उपन्यासों के ये पात्र अपने-अपने स्वार्थों के लिए राजनीतिक चालें चलते दिखाई देते हैं।

'तमस' उपन्यास में लेखक अंग्रेज शासकों की इस मानसिकता को उजागर करते हैं कि - "हुकूमत करने वाले यह नहीं देखते प्रजा में कौनसी समानता पाई जाती है, उनकी दिलचस्पी तो यह देखने में होती है कि वे किन-किन बातों

में एक-दूसरे से अलग हैं।"[3] इसी प्रकार 'शहर में कर्फ्यू' उपन्यास में भी आजाद भारत के राजनेताओं द्वारा जनता की भिन्नताओं का फायदा उठा चुनावी उपलब्धी हासिल करने वाली मानसिकता को उजागर किया गया है- "चुनाव के समय दंगा होने का खतरा यही था कि वोटर हिन्दू और मुस्लिम में बँट जायेंगे। मुसलमान हाजी बदरूद्दीन के पीछे गोलबन्द होंगे तो हिन्दू भी किसी हिन्दू नेता की तलाश में जायसवाल के समर्थन में एक-जुट हो जायेंगे।"[4] अतः दोनों उपन्यासकारों के कहने के तरीके में अन्तर होने के बावजूद भी दोनों अपने-अपने समय में खेली जाने वाली फूट डालो और राज करो की राजनीति को उजागर करते हैं।

'तमस' उपन्यास में लेखक ने देश में हो रहे सांप्रदायिक दंगों के पीछे- "यह सब अंग्रेजों की शरारत है"[5] को जिम्मेदार माना है तो 'शहर में कर्फ्यू' उपन्यास में राजनेताओं और पूँजीपतियों की मिली जुली चाल को - "पूरा शहर जानता था कि जायसवाल और हाजी जब मिलकर चाहें शहर में दंगा हो जाएगा।"[6]

'तमस' उपन्यास का कथानक जिस समय को आधार बनाकर लिया गया है, उस समय भारत पर अंग्रेजों का शासन था। अतः भीष्म साहनी ने साम्प्रदायिक दंगों के पीछे अंग्रेजों की राजनीति को जिम्मेदार माना है। वहीं 'शहर में कर्फ्यू' उपन्यास स्वतंत्र भारत की रचना है। जिसमें शासन की बागडोर अंग्रेजों के हाथ से बड़े-बड़े राजनेताओं और पूँजीपतियों के हाथ में आ गई है। इसलिए इस उपन्यास में विभूति नारायण राय राजनेताओं और पूँजीपतियों की शक्ति को दंगा करवाने की वजह मानते है। अतः दोनों उपन्यासों में जिसके हाथ में सत्ता है उसके द्वारा अपनी शक्ति का दुरुपयोग करते हुए दिखाया गया है।

धार्मिक असहिष्णुता

धार्मिक असहिष्णुता साम्प्रदायिकता का एक प्रमुख कारण होती है। दोनों लेखकों ने इसका चित्रण अपने उपन्यासों में किया है।

'तमस' उपन्यास में लेखक धर्मान्धता को उजागर करते हुए लिखते हैं कि- "किसी ने शरारत की है।... मस्जिद की सीढ़ी पर कोई आदमी सुअर मारकर फैंक गया है।"7 जिसके परिणामस्वरूप मुसलमानों द्वारा गाय की हत्या कर दी जाती है- "कुएँ की ओर से किसी के भागते कदमों की आवाज आई।... एक गाय भागती आ रही थी। उसके पीछे-पीछे एक आदमी सिर पर मुंडासा बाँधे और हाथ में डंडा लिए गाय के पीछे-पीछे भागता हुआ, उसे हांके लिए जा रहा था। उसकी छाती खुली थी और गले में तावीज झूल रहा था।"[8] इसी धार्मिक उन्माद का चित्रण हमें 'शहर में कर्फ्यू' उपन्यास में भी मिलता है- ''तीन-चार लड़के.... एक मन्दिर की दीवाल पर बम पटक कर वापस उसी गली में भाग गए। जो चीज दीवाल पर पटकी गयी वह बम कम पटाखा ज्यादा थी। उससे सिर्फ तेज आवाज हुई। कोई जख्मी नहीं हुआ। बम चूँकि मन्दिर की दीवाल पर फेंका गया था इसलिए उस समय वहाँ मौजूद हिन्दुओं ने मान लिया कि बम फेंकने वाले मुसलमान रहे होंगे इसलिए उन्होंने एकदम से वहाँ से गुजरने वाले मुसलमानों पर हमला कर दिया। सबसे पहले एक मोटर साइकिल पर जा रहे तीन लोगों पर हमला किया गया।... इसके अलावा भी उधर से गुजरने वाले कई लोग पिटे।"[9]

अतः दोनों उपन्यासकार धार्मिक उन्माद की स्थिति में बिना सोचे समझे लोगों की प्रतिक्रिया

देने का चित्रण करते हैं। 'तमस' का यह कथन कि- "अंग्रेज ने फेंका है।"[10] तथा 'शहर में कर्फ्यू' का यह कथन कि- "लगता था जैसे सोची-समझी योजना के तहत कोई अदृश्य हाथ इन सारी घटनाओं के पीछे काम कर रहा था।"[11] दोनों ही इस बात की पुष्टि करते हैं कि सांप्रदायिक विद्वेष का वातावरण अपने-आप निर्मित नहीं हो रहा था, बल्कि निर्मित करवाया जा रहा था।

आर्थिक स्वार्थ

आर्थिक रूप से धनी तथा सत्ता में बैठे शीर्षस्थ लोग अपने आर्थिक लाभ के लिए समस्त धर्मों तथा रीति-रिवाजों को परे रखकर सम्बन्ध निर्मित करते हैं। उनके लिए धर्म से अधिक व्यापार मायने रखता है। दोनों उपन्यासकारों ने राजनेताओं तथा पूँजीपतियों के इस मिले-जुले रूप का चित्रण किया है। 'तमस' उपन्यास में शेख नूरइलाही और लाला लक्ष्मीनारायण (दोनों व्यापारी) के माध्यम से लेखक स्पष्ट करता है कि पूँजीपतियों के लिए धर्म से कहीं अधिक धन का महत्त्व होता है- "तेरी गाँठें मैंने गोदाम में से उठवा दी थीं।... पहले तो मैंने कहा, जलने दो कराड़ का माल। फिर दिल में आया, नहीं यार, आखिर दोस्त है मेरा...।"[12] ऊपर-ऊपर मित्रता का व्यवहार करने वाले दो व्यापारियों के "अन्दर ही अन्दर वैमनस्य भी था, घृणा भी थी, पर दोनों व्यापारी थे, व्यवहाकर कुशल थे अपने लिए एक-दूसरे की जरूरत समझते थे।"[13] अतः इन लोगों का काम सिर्फ सामान्य जनता को धर्म के नाम पर भड़काना था, जिससे इनको आर्थिक लाभ हो। इसी तरह 'शहर में कर्फ्यू' उपन्यास में भी पूँजीपतियों की अर्थ केन्द्रित मानसिकता को उजागर किया गया है। फर्म खेमचन्द जुगलकिशोर के मालिक लाला राधे लाल का यह कथन कि- "ठीक है दंगे में अनाज की कीमतें बढ़ेंगी तो मेरा फायदा हो जाएगा। लेकिन फायदा किसे काटता है।... हाँ, अब जनता साली.... है। दंगा करती है तो चार पैसे हम भी कमा लेते हैं।"[14] खुलकर घोषणा करता है कि दंगों की पीछे इन्हीं लोगों की व्यापार केन्द्रित मानसिकता कार्य कर रही है।

अतः दोनों उपन्यासकारों ने; भीष्म साहनी ने अप्रत्यक्ष तो विभूति नारायण राय ने प्रत्यक्ष रूप से; दंगों से पूंजीपतियों को होने वाले लाभ का वर्णन किया है।

अज्ञान और अफवाहों का वातावरण

भीष्म साहनी तथा विभूति नारायण राय दोनों ही उपन्यासकारों ने साम्प्रदायिकता के मूल में अज्ञान और अफवाहों की महत्त्वपूर्ण भूमिका स्वीकार की है। वस्तुस्थिति के प्रति अज्ञान से अफवाहों का वातावरण निर्मित होता है, जिससे साम्प्रदायिकता का माहौल और गरमा जाता है।

'तमस' उपन्यास में लेखक अज्ञान से उत्पन्न भय तथा क्रोध के वातावरण को चित्रित करते हुए कहते हैं कि- "सुना है एक गाय भी काटी गई है। माई सत्तो की धर्मशाला के बाहर उसके अंग फेंके गए हैं।... गोवध हुआ तो यहाँ खून की नदियाँ बह जाएँगी।"[15] इसी तरह 'शहर में कर्फ्यू' उपन्यास में भी- "बम चूँकि मन्दिर की दीवाल पर फेंका गया था इसलिए उस समय वहाँ मौजूद हिन्दुओं ने मान लिया कि बम फेंकने वाले मुसलमान रहे होंगे इसलिए उन्होंने एकदम से वहाँ से गुजरने वाले मुसलमानों पर हमला कर दिया।.... बम हमेशा दस-पन्द्रह गज दायें-बायें किसी दीवाल पर फेंका जाता जिससे जख्मी कोई नहीं होता। लेकिन मान लिया जाता कि इसे मुसलमानों ने फेंका होगा इसलिए फौरन उस इलाके के सभी मुसलमान घरों की तलाशी ली जाती है।"[16] अतः दोनों उपन्यासकारों ने 'सुना है'

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 नवम्बर 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

व 'मान लिया जाता' के बीच फँसे लोगों के अधूरे ज्ञान से उत्पन्न भयंकर त्रासदी का चित्रण किया है। अतः दोनों उपन्यासकारों द्वारा उल्लिखित सांप्रदायिकता के कारणों में पर्याप्त समानता दृष्टिगोचर होती है। दोनों उपन्यासकारों ने राजनीति, धर्म, अर्थ, अज्ञान को सांप्रदायिकता का मूल माना है।

वैषम्य

एक रचना दूसरी रचना से पूर्णतः समान नहीं हो सकती। कुछ समानताओं के साथ-साथ उनमें कुछ असमानताएँ भी पाई जाती है - 'तमस' तथा 'शहर में कर्फ्यू' दोनों उपन्यासों का रचनाकाल अलग-अलग है, दोनों की पृष्ठभूमि भी अलग-अलग। तमस उपन्यास आजादी के समय होने वाले सांप्रदायिक दंगों का चित्रण करता है तो 'शहर में कर्फ्यू' आजादी के बाद के दंगों का। अतः दोनों उपन्यासकारों ने भारत में दो अलग-अलग समय पर होने वाले दंगों का चित्रण किया है। इसीलिए 'तमस' तथा 'शहर में कर्फ्यू' दोनों उपन्यासों में कुछ असमानताएँ हैं जो एक उपन्यास को दूसरे उपन्यास से अलग करती है।

पृष्ठभूमि सम्बन्धी वैषम्य

'तसम' तथा 'शहर में कर्फ्यू' दोनों उपन्यासों के स्वतंत्र भारत में प्रकाशित होने के बावजूद दोनों उपन्यासों की पृष्ठभूमि एक-दूसरे से पूर्णतः भिन्न है। 'तमस' उपन्यास में लेखक विभाजन के पूर्व के पाँच दिनों के साम्प्रदायिक दंगों का आँखों देखा हाल प्रस्तुत करते हैं, वहीं 'शहर में कर्फ्यू' उपन्यास में विभाजन के पश्चात् सांप्रदायिक दंगों के परिणामस्वरूप लगने वाले कर्फ्यू की तीन दिन की मर्मस्पर्शी दास्तान व्यक्त की गई है।

'तसम' उपन्यास के सम्बन्ध में लिखित कथन - "श्री साहनी ने 'तमस' में 1947 के मार्च-अप्रेल' में हुए भीषण साम्प्रदायिक दंगे के पाँच दिनों की कहानी को इस रूप में प्रस्तुत किया है जिससे कि हम उसकी पूरी सामाजिक-राजनीतिक पृष्ठभूमि से अच्छी तरह अवगत हो जाएँ। 'तमस' ऊपरी दृष्टि से एक विशेष कालखंड में राज्य-विशेष में घटित साम्प्रदायिक दंगे की कहानी है, किन्तु वस्तुतः यह हमारे राष्ट्रीय कल्पवृक्ष की जड़ में अन्तर्निहित उस संकीर्ण मानसिकता के विष की कहानी है जो आज भी हमारे लिए एक चुनौती बना हुआ है।"[17] इसी तरह 'शहर में कर्फ्यू' के सम्बन्ध में लिखित कथन- "शहर में कर्फ्यू' का कथ्य दंगों के बाद शहर में लगे कर्फ्यू के सन्नाटे के नेपथ्य में मानवीय हताशा, भूख-प्यास, अव्यवस्था, भय, कुंठा और मानवाधिकारों के हनन की सूक्ष्म तस्वीर है। सांप्रदायिक जुनून में निरंतर बौने होते जा रहे इंसानी कद के खिलाफ दस्तावेज है।"[18] इस प्रकार दोनों ही कथन स्पष्ट करते हैं कि दोनों उपन्यासों का मूल भाव (सांप्रदायिकता) एक होने के बावजूद भी दोनों का ढाँचा अलग-अलग है। 'तमस' जहाँ परतंत्र भारत के दंगों की दास्तान व्यक्त करता है, वहीं 'शहर में कर्फ्यू' आजाद भारत में दंगों के बाद लगने वाले कर्फ्यू की। अतः एक उपन्यास दंगों में होने वाले भीषण नर-संहार, आगजनी, लूटपाट, बलात्कार आदि का बहुत ही मर्मव्यंजक चित्र प्रस्तुत करता है, जबकि दूसरा दंगों की तरफ संकेत मात्र करते हुए कर्फ्यू के दौरान शहर की घुटन को व्यक्त करता है।

नौकरशाही और पुलिसतंत्र

'तमस' उपन्यास में जहाँ आजादी के समय होने वाले सांप्रदायिक दंगों में हिन्दू और मुसलमान

दोनों धर्मों के लोगों द्वारा विरोधी धर्म के लोगों के साथ लूटपाट और आगजनी की घटनाओं का चित्रण मिलता है, वहीं 'शहर में कर्फ्यू' उपन्यास में यह काम तथाकथित जनता की सेवक पुलिस द्वारा करते हुए दिखाया गया है। 'तमस' उपन्यास में जहाँ प्रशासन दंगों के दौरान मूक दर्शक की भूमिका निभाता है, वहीं 'शहर में कर्फ्यू' में यह मैदान में उतरता हुआ दिखाया गया है।

'शहर में कर्फ्यू' उपन्यास में कर्फ्यू लगने के बाद पुलिस द्वारा तलाशी के नाम पर की जाने वाली लूटपाट का चित्रण मिलता है- "तलाशी का अन्त लगभग सभी घरों में एक जैसा होता है। आखिर में स्याह राख पुते चेहरे अगर आँसुओं से तर नहीं होते तो अपमान और वेदना से बुझे-बुझे जाते हुए बूटों की आवाज सुनते रहते हैं।... औरतों ने झपटकर अपने जेवरों के बक्सों या नकदी की गुल्लकों को उलट-पलटकर रोना-पीटना शुरू कर दिया।"[19] लेकिन 'तमस' उपन्यास में पुलिस द्वारा की जाने वाली ज्यादती का चित्रण हमें कहीं भी नहीं मिलता।

"आवाजें-सिर्फ आवाजें पूरे माहौल में भर गयीं। आवाजें हाथों से दरवाजा पीटने की थीं, आवाजें बूटों से दरवाजों पर ठोंकरें मारने की थीं, आवाजें बच्चों के रोने और औरतों के चीखने की थीं, आवाजें कुन्दों के पीठ या पैर पर टकराने से पैदा हो रहीं थीं, आवाजों में गालियाँ, सिसकियाँ और गिड़गिड़ाहट भरी थी। ये आवाजें अचानक पैदा हुई और उन्होंने पूरे माहौल को मथ डाला।"[20] 'शहर में कर्फ्यू' उपन्यास का यह कथन स्पष्ट करता है कि स्वतंत्र भारत का स्वच्छंद पुलिस प्रशासन किस तरह अपने अधिकारों का नाजायज फायदा उठाता है, तथा सांप्रदायिक दंगों के भयानक वातावरण में भी अपनी जेब भरने को प्रयासरत रहता है।

अल्पसंख्यकों के प्रति सहानुभूति

पूर्णतः हिन्दू समर्थक नहीं होने के बावजूद भी भीष्म साहनी अपने उपन्यास में अधिकांश हिन्दू पात्रों को ही सांप्रदायिकता का शिकार होते दिखाया है, वहीं 'शहर में कर्फ्यू' उपन्यास में लेखक की पूर्ण सहानुभूति का पात्र बना है आजाद भारत का अल्पसंख्यक मुसलमान वर्ग।

'तमस' उपन्यास में वर्णित गाँव में बाहर से तुर्क आक्रमण के समय समस्त सिक्ख औरतों का कुएँ में कूदकर जान दे देना, इकबाल सिंह को मुसलमान बनाने की प्रक्रिया में दी जाने वाली शारीरिक व मानसिक प्रताड़ना, हरनाम सिंह और बन्तों का दर-दर की ठोकरें खाना, जरनैल व नत्थू की हत्या आदि अधिकांश कथांश हिन्दू पात्रों के प्रति ही पाठक की संवेदना को जगाते हैं, वहीं 'शहर में कफ्र्यू' में वर्णित सईदा व उसके परिवार की समस्त यातनाएँ, यूसुफ व उसका परिवार, तलाशी के दौरान प्रताड़ित बूढ़े मुसलमान वकील का परिवार, मंदिर के पास से गुजरते मुसलमान तथा पुलिस की ज्यादती के शिकार समस्त तथाकथित पाकिस्तानी मुहल्ले के लोग सभी स्वतंत्र भारत के अल्पसंख्यक मुसलमान हैं। शहर में कर्फ्यू लगता है तो वह भी सिर्फ तथाकथित पाकिस्तानी इलाके में (मुस्लिम बहुल इलाका)- "शहर के पाकिस्तानी हिस्से में कर्फ्यू लग गया। कुछ सड़कें ऐसी थीं जो हिन्दू और मुस्लिम आबादी के बीच से होकर गुजरती थीं। उनके मुस्लिम आबादी वाले हिस्से में कर्फ्यू लग गया और वहाँ जिन्दगी पूरी तरह से थम गयी जबकि हिन्दू आबादी वाले हिस्सों में जिन्दगी की रफ्तार कुछ धीमी पड़ गयी।... ये हिन्दू लोग थे।

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 नवम्बर 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

इसलिए स्वाभाविक रूप से देश की सबसे ज्यादा चिन्ता उन्हें थी।"[21]

वहीं 'तमस' उपन्यास में दंगों का शिकार बने हिन्दूओं का वर्णन ही अधिक मिलता है- "पुल के पार एक हिन्दू को कत्ल कर दिया गया है।... इधर खतरे की घंटी बज रही है, उधर मंडी जल रही है, हिन्दुओं का लाखों का नुकसान हो रहा है।"[22] तथा इकबाल सिंह के साथ होने वाला अमानुषिक व्यवहार- "भीड़ में से रास्ता बनाता हुआ नूरदीन अन्दर आया।... अन्दर आते ही वह सीधा इकबाल सिंह के पास बैठ गया। बाएँ हाथ से इकबाल सिंह का मुँह खोला और दाएँ हाथ में पकड़ा माँस का बड़ा-सा टुकड़ा, जिसमें से टप-टप खून की बूँदे चू रही थीं, इकबाल सिंह के मुँह में डाल दिया। इकबाल सिंह की आँखें बाहर आ गयीं। उसका साँस रूक रहा था।... शाम ढलते-ढलते इकबाल सिंह के शरीर पर से सिखी की सब अलामतें दूर कर दी गई थीं और मुसलमानी की सभी अलामतें उतर आई थीं।"[23]

अतः भीष्म साहनी ने जिस इलाके (लाहौर) में हुए सांप्रदायिक दंगों का चित्रण किया है, वह मुस्लिम बहुल इलाका था, वहीं 'शहर में कर्फ्यू' में स्वतंत्र भारत का बहुसंख्यक हिन्दुओं का। इसलिए स्वाभाविक ही है कि भीष्म साहनी के उपन्यास में जहाँ हिन्दुओं के साथ ज्यादती हो रही है वहीं 'शहर में कर्फ्यू' उपन्यास में मुसलमानों के साथ। इस लिए दोनों उपन्यासकारों की सहानुभूति के पात्र अलग-अलग धर्म से संबंध रखने वाले हैं।

पत्रकारिता चित्रण संबंधी वैषम्य

'शहर में कर्फ्यू' उपन्यास में आजाद भारत में प्रेस-मीडिया के स्वच्छंद व मनमाने आचरण पर कटाक्ष किया गया है, जबकि 'तमस' उपन्यास मंे हमें कहीं भी तत्कालीन अखबारों की रिपोर्टों को लेकर कोई टिप्पणी प्राप्त नहीं होती।

'शहर में कर्फ्यू' ने मीडिया के उस पक्ष को उजागर किया है, जहाँ वह राजनीतिज्ञों और पूजीपतियों के आश्रय में मनमाना व्यवहार करती है- "मस्जिद के बगल में मुस्लिम लीग के दफ्तर पर उनका झण्डा फहरा रहा था। थोड़ी-सी ट्रिक फोटोग्राफी से झण्डा मस्जिद पर पहुँच गया। नीचे यह कैप्शन देने में उनका क्या जाता है कि झण्डा पाकिस्तानी है। अब इस बात से अगर शहर का तनाव कुछ बढ़ गया तो अखबार वालों की सेहत पर क्या फर्क पड़ता है। दिल्ली से लखनऊ तक अखबारों के दफ्तरों में ज्यादातर पैन्ट के नीचे हाफ पैन्ट पहनने वाले लोग हैं।"[24]

आजाद भारत के समय पत्रकारिता पूर्णतः देश के प्रति समर्पित थी, आजादी के लिए जन-जागरण लाना ही उसका प्रमुख ध्येय था, अतः साम्प्रदायिक दंगों को बढ़ावा देने का कोई भी प्रयास पत्रकारिता द्वारा नहीं किया गया था। इसीलिए पत्रकारिता के मनमाने प्रयोग का वर्णन भीष्म साहनी के उपन्यास में कहीं नहीं मिलता। लेकिन आजादी के बाद पत्रकारिता व मीडिया का क्षेत्र निरन्तर विकसित होता रहा। और अपने विकास के दौरान उसका सम्पर्क राजनीति व पूँजीपतियों से होने लगा, जिससे पत्रकारिता में भी निरन्तर भ्रष्टाचार पनपता रहा। अतः अपने स्वार्थ से प्रेरित पत्रकारिता; खबरों को सांप्रदायिकता से जोड़कर छापने लगी। अतः विभूति नारायण राय ने प्रत्येक घटना को साम्प्रदायिकता के मसाले में भूनकर छापने वाले प्रेस-मीडिया की स्वच्छन्दता का चित्रण अपने उपन्यास में किया है। जिसमें मुन्शी हरप्रसाद जैसे कुछ संवाददाताओं को छोड़कर सभी पत्रकार

स्वार्थ से प्रेरित दिखाए गए हैं- "दंगा-वंगा चलता रहेगा प्रेस कॉलोनी का क्या हुआ ?"[25]

निष्कर्ष

अतः भीष्म साहनी के 'तमस' तथा विभूति नारायण राय के 'शहर में कर्फ्यू' उपन्यास का तुलनात्मक अध्ययन-अनुशीलन करने के बाद यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि दोनों उपन्यासों में समानता के तत्व ही अधिक मिलते हैं। परन्तु असमानताएँ भी कम नहीं हैं जिनका यथास्थान उल्लेख किया गया है।

दोनों ही उपन्यासों की रचना सांप्रदायिकता को आधार बनाकर की गई है, इसलिए साम्प्रदायिकता के कारणों को स्पष्ट करते समय दोनों उपन्यासकारों का दृष्टिकोण लगभग समान रहा है। राजनीतिक स्वार्थ, धर्मान्धता, आर्थिक स्वार्थ, अज्ञान तथा अफवाहों के परिवेश को दोनों उपन्यासकारों ने साम्प्रदायिक दंगों का मूल आधार माना है। दंगों के पीछे न तो सामान्य हिन्दू का हाथ होता है और न ही सामान्य मुसलमान का। बल्कि इनके पीछे एक सोची-समझी सत्तालोलुप लोगों की राजनीतिक, धार्मिक व आर्थिक मानसिकता कार्य करती है; जो संदियों से साथ रह रहे समान संस्कृति से सम्बन्ध रखने वाली दो धर्मों की जनता को एक-दूसरे के खून का प्यासा बना देती है।

पृष्ठभूमि, अल्पसंख्यकों के प्रति संवेदनशीलता, पत्रकारिता के चित्रण संबंधी तथा पुलिस व प्रशासन की लूटपाट व मनमाने आचरण सम्बन्धी कुछ वैषम्य भी दोनों उपन्यासों में दिखाई देते हैं।

अतः दोनों उपन्यास न तो पूरी तरह एक-दूसरे से पृथक हैं और न ही पूरी तरह समान। पर्याप्त साम्य-वैषम्य को लिए 'तमस' तथा 'शहर में कर्फ्यू' दोनों उपन्यास आजादी के समय से फैलते आ रहे सांप्रदायिकता के जहर का चित्रण करते हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1.साहनी भीष्म, आज ले अतीत, पृष्ठ 129
2.सम्पादक गुप्त शम्भु, जैन सर्वेश, अनहद गरजै में संकलित सर्वेश जैन के विभूति नारायण राय अर्थात् गत तीस वर्षों का भारतीय यथार्थ लेख से लिया गया, पृष्ठ 28
3.साहनी भीष्म, तमस, पृष्ठ 28
4.राय विभूति नारायण, शहर में कर्फ्यू, पृष्ठ 86
5.साहनी भीष्म, तमस, पृष्ठ 103
6.राय विभूति नारायण, शहर में कर्फ्यू, पृष्ठ 86
7.साहनी भीष्म, तमस, पृष्ठ 35
8.वही, पृष्ठ 37
9.राय विभूति नारायण, शहर में कर्फ्यू, पृष्ठ 11
10.साहनी भीष्म, तमस, पृष्ठ 35
11.राय विभूति नारायण, शहर में कर्फ्यू, पृष्ठ 12
12.साहनी भीष्म, तमस, पृष्ठ 110
13.वही, पृष्ठ 111
14.राय विभूति नारायण, शहर में कर्फ्यू, पृष्ठ 89
15.साहनी भीष्म, तमस, पृष्ठ 39.40
16.राय विभूति नारायण, शहर में कर्फ्यू, पृष्ठ 11.12
17.साहनी भीष्म, तमस में लिखित रामचंद्र तिवारी के आमुख शीर्षक से पृष्ठ 4
18 सम्पादक गुप्त शम्भु, जैन सर्वेश, अनहद गरजै में संकलित शाहिद रहीम के कर्फ्यू के पीछे लेख से पृष्ठ 218
19.राय विभूति नारायण, शहर में कर्फ्यू, पृष्ठ 92.94
20.वही, पृष्ठ 90
21.राय विभूति नारायण, शहर में कर्फ्यू, पृष्ठ 24, 37
22.साहनी भीष्म, तमस, पृष्ठ 49, 69
23.वही, पृष्ठ 121.122
24.राय विभूति नारायण, शहर में कर्फ्यू, पृष्ठ 80
25.वही, पृष्ठ 81